संख्या 5
मूल्य रु. 4.00
त्रिशूल
कॉमिक्स
भारतकुमार
और
पागल लामा
Books.Jakhira.com
eBooks

भारत कुमार
और
पागल लामा

यह है हिमालय की दुर्गम घाटियों में स्थित एक अनोखी प्रयोगशाला का एक कक्ष-- वैज्ञानिक विक्रम और भारत कुमार ने इस प्रयोगशाला को देश और विश्व की सुरक्षा हेतु स्थापित किया है----
भारतकुमार, यह लो-- मैंने मानसिक तरंगों को पकड़ने वाले इस यंत्र को पूरी तरह से तैयार कर दिया है-- इस यंत्र के सहारे तुम किसी भी अपराधी का पता लगा सकते हो!
यह तो बहुत ही अच्छा हुआ विक्रम चाचा-- अब तो मेरा काम बहुत ही आसान हो जायेगा--!

भारत कुमार, याद रहे-- सरकार ने तुम्हें गणतंत्र दिवस परेड की निगरानी के लिए विशेष तौर पर बुलाया है-- सो किसी प्रकार की कमी न रहने पाये--!!
आप चिन्ता न करे विक्रम चाचा, मैं अपनी ओर से कोई कमी नहीं छोडूंगा!

और भारत कुमार कमर पर लगे अपने विशेष रॉकेट के सहारे राजधानी की ओर उड़ चला----

कुछ ही मिनटों बाद भारत कुमार राजपथ पर उड़ते हुए अपने विशेष यंत्र के सहारे भीड़ पर निगरानी रख रहा था...
इस हिस्से में मौजूद भीड़ के लोगों की मानसिक तरंगे तो बिलकुल ठीक हैं...!!
अब ज़रा मैं सड़क के उस ओर वाली भीड़ का भी निरीक्षण कर लूं... परेड शुरू होने ही वाली है..!
टूं! टूं! टूं!
यहां किसी अपराधी की मानसिक तरंगों के संकेत मिल रहे हैं... मुझे उसे जल्दी ढूंढना है!
और भारत कुमार ने कुछ ही देर में भीड़ में से उस सदिंग्ध अपराधी को ढूंढ निकाला....
यह यंत्र तो वाकई कमाल का है....! यह अपराधी तो कोई विदेशी लगता है... इसके इरादे तो बहुत ही खतरनाक दिखते हैं!
टूं! टीं!
हमारा बम बिलकुल तैयार होटा.... ..कार आते ही हम अटैक करटा.. गुर्र्र्र्र!
Books.Jakhira.com
eBooks

और भारत कुमार ने एक क्षण भी बिना चूके उस संदिग्ध अपराधी को धर दबोचा.. यह सब उस ने बिजली की सी तेजी से किया..
इस बात की भीड़ को भी थोड़ी सी खबर नहीं होनी चाहिये!
व्हाट!
मिस्टर, सीधे थाने चलो .... तुम्हारी तलाशी होगी!
टटटुम कककौन होटा?
कुछ ही क्षण बाद भारत कुमार उस व्यक्ति को लेकर पुलिस स्टेशन पहुंचा....
यह तो प्लास्टिक बम है... शायद इसी लिए यह मैटल डिटेक्टर से बच निकला था.. भारत कुमार, आज तो तुम ने एक बहुत बड़ी दुर्घटना को टाल दिया..!
अब तुम चिन्ता न करो भारतकुमार.. यह हमारी हिरासत में है!
ठीक है.. अब मैं जाता हूं... मुझे गणतंत्र दिवस परेड में शामिल होना है .... गुडबाई..!

और फिर भारत कुमार भी शान से तिरंगा उठाये हुए गणतंत्र दिवस की भव्य परेड में शामिल हुआ...

... और अब यह देखिये भारतीय आकाश की शोभा बढ़ाता भारत का वीर नौजवान भारत कुमार -- जो सदैव देश की सुरक्षा के लिए तैयार रहता है!

भारत कुमार को देखते ही पूरा जन-समूह जोश से भर उठा और जिन्दाबाद के नारे लगाने लगा....

कुछ ही देर बाद भारतकुमार वापस हिमालय की घाटियों में स्थित अपनी प्रयोगशाला में पहुंचा...
यह रही हमारी प्रयोगशाला... दुश्मनों की निगाहों से बहुत दूर...!
टिन टुन
क्या हाल है भाई टिन टुन तुम्हारा? यह लो, हमारे इस राष्ट्रीय ध्वज को पूरे सम्मान के साथ रख दो...!!
आओ भारतकुमार... मैं तुम्हारी ही राह देख रहा था.... खैरियत तो है न सब...?
जी हां, विक्रम चाचा... एक विदेशी उग्रवादी को मैंने समय पर पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया था...!
बहुत खूब... मुझे पहले से ही सूचना मिल चुकी थी कि कुछ विदेशी उग्रवादी परेड में गड़बड़ी करना चाहते हैं!
eBooks

विक्रम चाचा, इस टी०वी० स्क्रीन पर यह कहां का चित्र आ रहा है?
यह तिब्बत के पास झूला नामक स्थान का चित्र है.. हमारे उप-ग्रह पर लगे एक विशेष कैमरे ने इसे पकड़ा है.. ..ऐसा लगता है यहां चीनी फौज में कुछ खास गतिविधियां हो रही हैं!

वैज्ञानिक विक्रम द्वारा स्थापित अनेक जासूसी उप-ग्रह हर क्षण दुनियां के हर देश पर अपनी निगाहें गड़ाये रखते हैं....
टी..टू!

यह देखो.. कई हेलीकॉप्टर और विशेष मोटर गाड़ियां यहां आयी हुई हैं... ... सैंकड़ों की तादाद में लोग काम में लगे हुए हैं....!!

और अब सारे के सारे यहां से चले गये हैं...... आस-पास का सारा इलाका साफ कर दिया गया है.. अब मुझे समझ में आ गया!

यह लोग परमाणु परीक्षण करने जा रहे हैं... देख लेना, कुछ ही मिनटों में यहां पर परमाणु विस्फोट होगा.. मेरे यंत्र संकेत दे रहे हैं...!!
बीप! बीप!!

वाह विक्रम चाचा, आपने तो बिलकुल ठीक अन्दाज़ा लगाया! यह विस्फोट तो बड़ा ही प्रलयंकारी लगता है... ऐसे परीक्षण अधिक नहीं होने चाहिये...!
बड़ड़ूम
अरे इस परमाणु परीक्षण को देखते-देखते कितना समय बीत गया... हमारे सोने और आराम करने का समय तो कबका निकल गया!
विक्रम-चाचा, यह तो हमारे साथ रोज़ ही होता है... हेहेहे...!!
मैं अभी अपने रॉबट टिन-टुन को बुलाता हूं...!!
टिन टुन!
टिन-टुन प्यारे, अब हम लोग आराम करने जा रहे हैं... तुम सभी यंत्रों और कम्प्यूटरों का ध्यान रखना... किसी प्रकार का खतरा होते ही हमें सूचित करना!

पूरी हिमालय पर्वतमाला रात की काली स्याही में डूब चुकी थी... हिम शिखर भी गहरी नींद ले रहे थे....

लेकिन वैज्ञानिक विक्रम की प्रयोगशाला के सारे यंत्र अपने-अपने कार्य में जुटे हुए थे... सैकड़ों स्वाचालित कम्प्यूटरस् उन्हें निर्देश दे रहे थे....
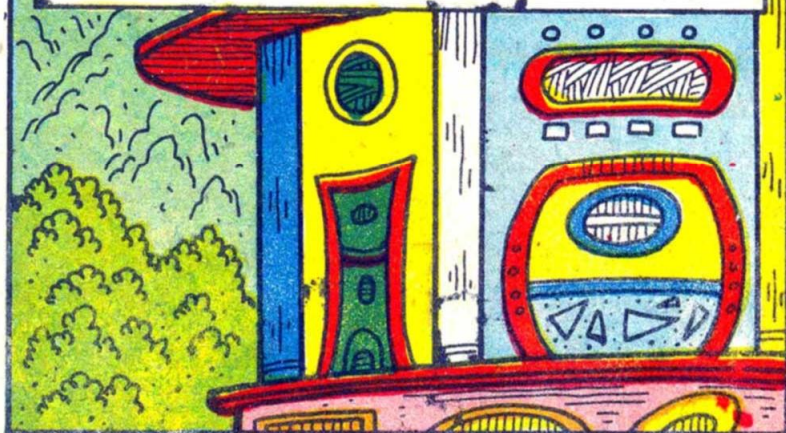
और भारत कुमार का प्यारा रॉबट टिनटुन पूरी सजगता के साथ उन कम्प्यूटर्स को निर्देश दे रहा था...
टिन टुन
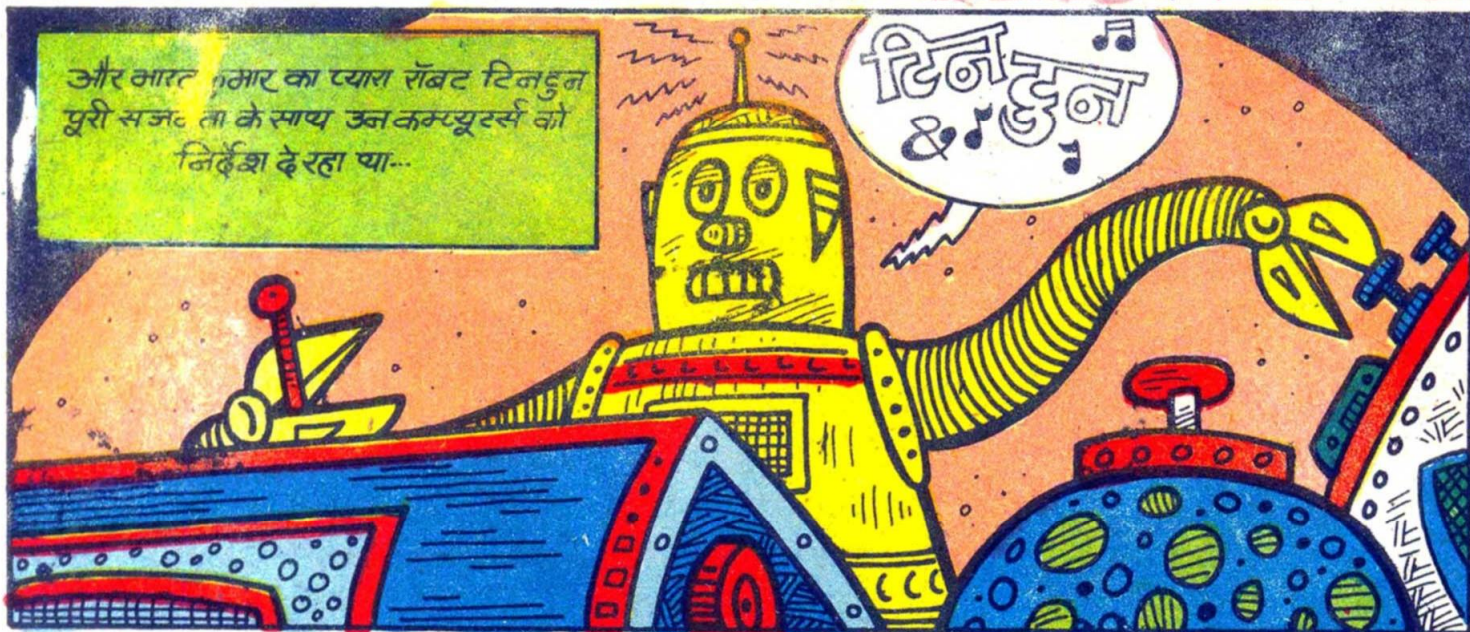
उसी रात ढाई बजे के करीब एक हिम शिखर पर बड़ी तेज रोशनी चमकी...
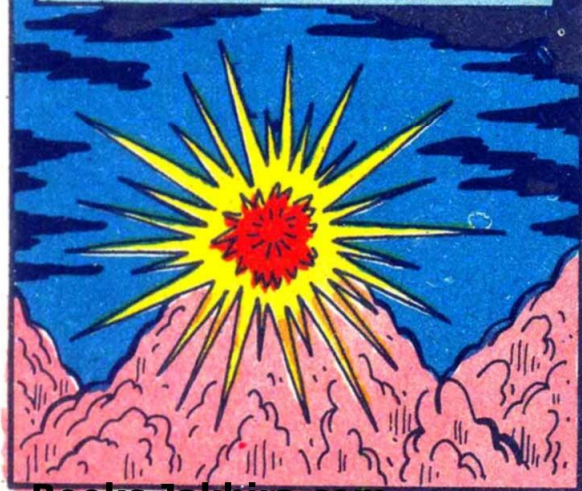
... और फिर उस इलाके में भयंकर भूकम्प आया.... क्षण भर को सारी पृथ्वी कांप उठी-----

उस समय भारत कुमार अपने विशेष वातानुकूलित कक्ष में सो रहा था ----- ... रॉबट टिन ट्रुन ने खतरे का अलार्म बजा दिया...
ट्रूऽऽऽ
भारत कुमार उसी क्षण उठ गया....
खतरे का अलार्म... .....? जाने क्या बात है...??
ट्रूऽऽ..
टिन ट्रुन लगातार खतरे का अलार्म बजा रहा है..... ... जरूर कोई बहुत बड़े खतरे की बात है!
कुछ ही देर में वैज्ञानिक विक्रम भी वहां आ पहुंचे.....
हे भगवान.. जरा टी० वी० स्क्रीन पर तो देखो... कितनी तबाही हुई है इस भूकम्प से.. यह सब हुआ कैसे?
यह तो मैं अभी नहीं बता पाऊं गा भारत कुमार... लेकिन तुम तुरन्त जाओ और खतरे में फंसे लोगों को बचाओ!
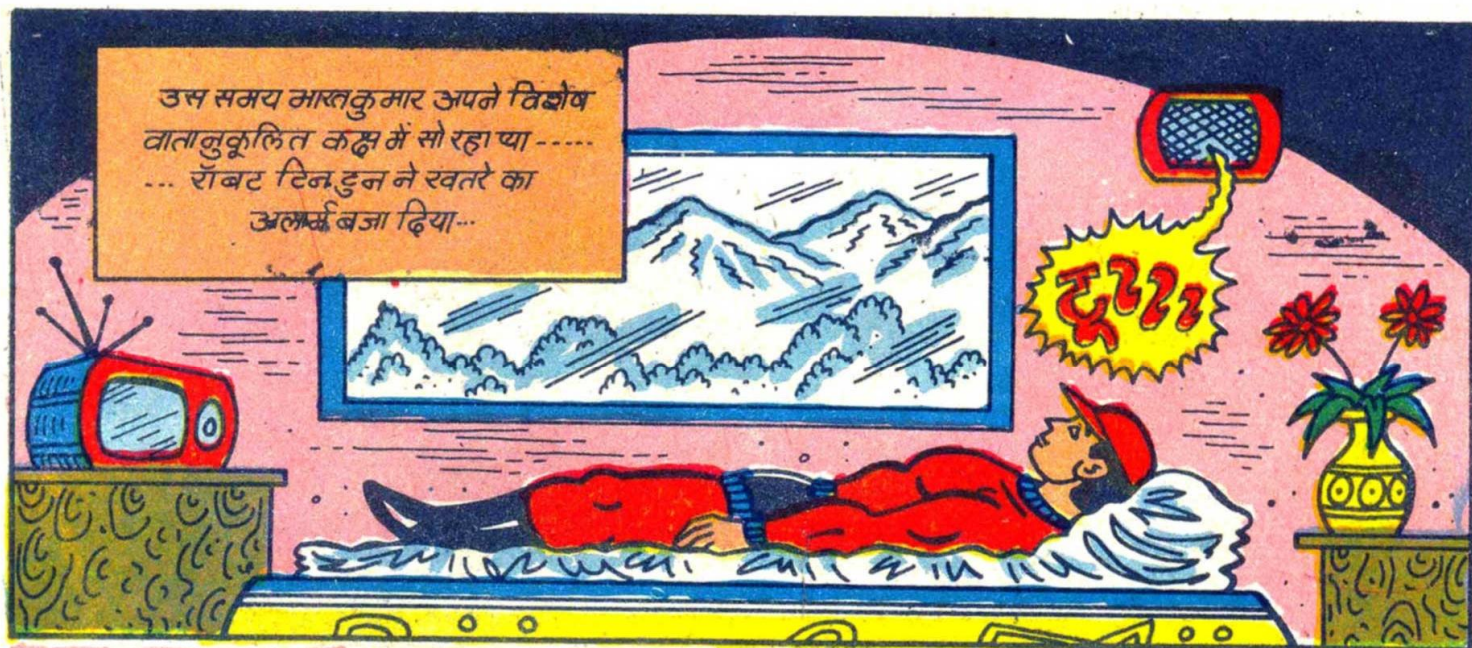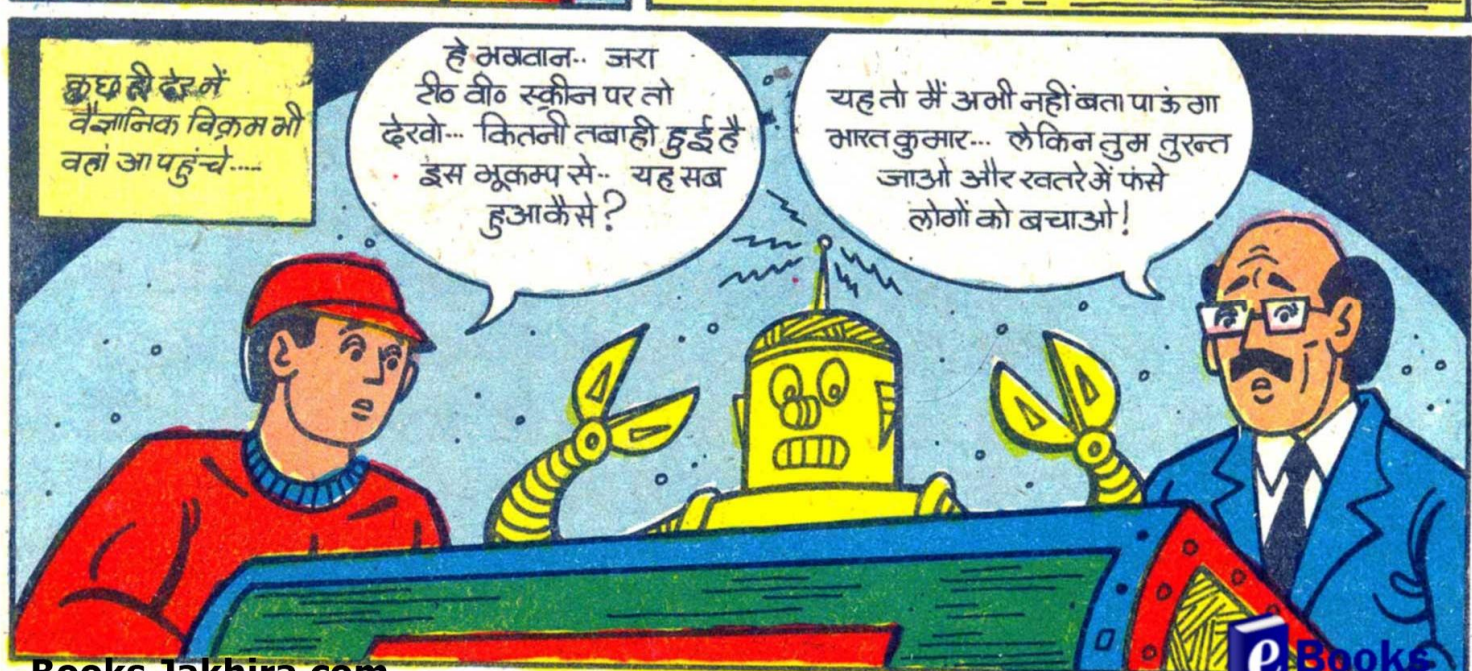
विक्रम की आज्ञा पाकर भारत कुमार तत्क्षण राहत कार्य के लिए उड़ चला...
--- और भारत कुमार ने अपनी जान पर खेलते हुए सैंकड़ों लोगों की जान बचायी....
हे ईश्वर.. अगर मैं इस विशाल पत्थर को न रोकता तो यह मकान चकनाचूर हो गया होता!
मम्मी, डैडी... ..वह देखो.. भारत कुमार भैया आ गये..!
Books.Jakhira.com
eBooks

और बलशाली भारत कुमार ने बर्फ में दबे उस पूरे मकान को ही उगल लिया...
मैंने सिनेमा और कॉमिक्स कथाओं में यह सब देखा-पढ़ा था.... लेकिन....??
खुश रहो भारत कुमार!
ईश्वर सदैव तुम्हारी मदद करें...!
और भारत कुमार सभी की दुआएँ लेता हुआ आगे बचाव कार्य करने चल पड़ा...
कुछ ही दूरी पर बर्फ में दबे एक पर्वतारोही दल को उसने देखा......
अच्छा ही हुआ जो मैं इस ओर यूँ ही आ निकला!
प्लीज! हैल्प अस!!
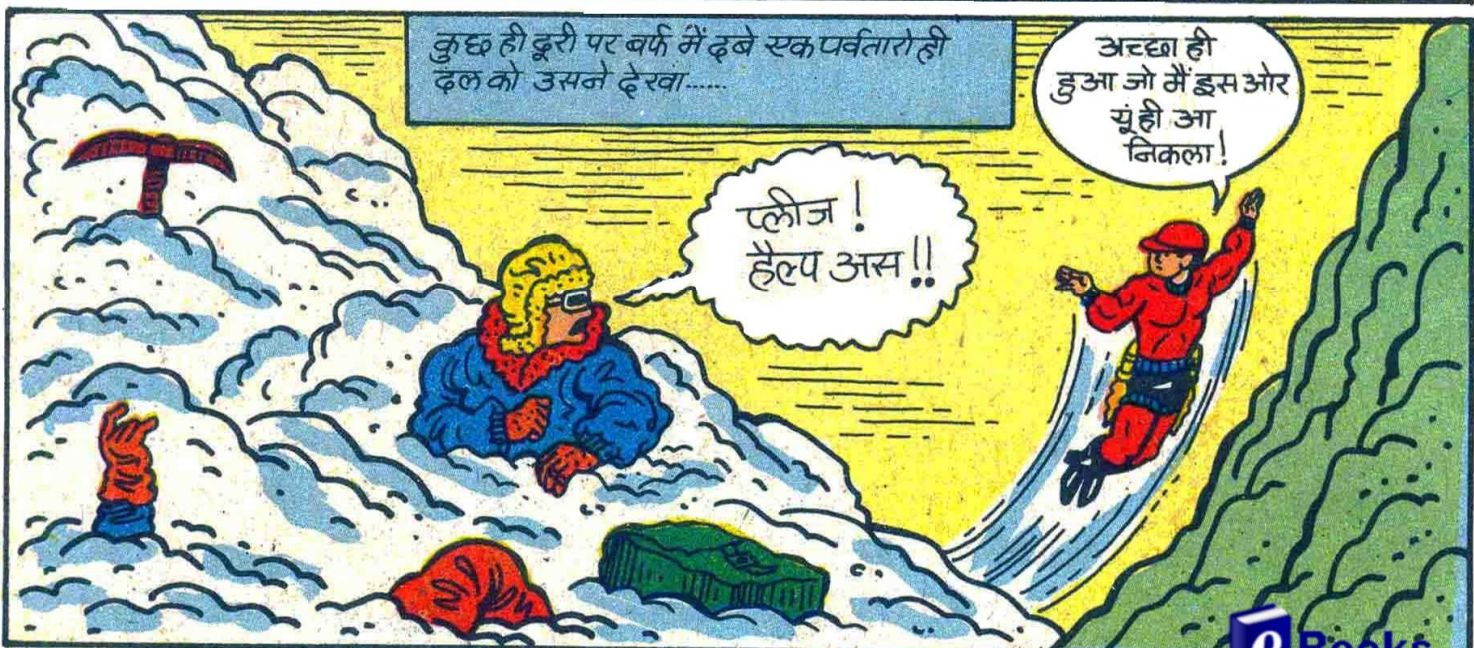
इसी बीच हिम शिखर पर उभरी रहस्यमयी रोशनी धीरे-धीरे बुझने लगी....
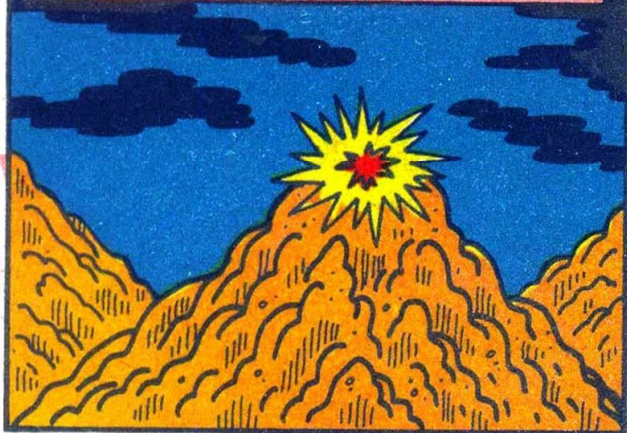
...और उस रोशनी के बुझते ही फिर उस पूरे इलाके में सदा की भांति पूर्ण शान्ति छा गयी.....
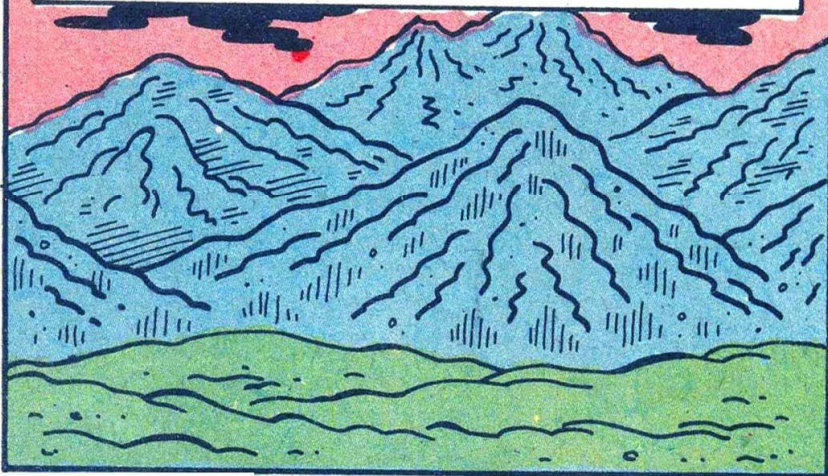
भारत कुमार ने पूरे इलाके में घूमते हुए मुसीबत में फंसे लगभग सभी लोगों की जान बचा ली थी....
हैलो, भारत कुमार.. काम खत्म हो गया हो तो वापस लौट आओ!
हैलो, विक्रम चाचा, संदेश मिल गया! काम खत्म हो गया... ...वापस आ रहा हूं.... ...ओवर!

और भारत कुमार वापस प्रयोगशाला आ पहुंचा....
मेरी टोपी में लगे विशेष माइक्रोफोन से मुझे आप का संदेश मिल गया था!
भारतकुमार, ऐसा लगता है कि हमें इस प्रलयंकारी भूकम्प के कारण का कुछ कुछ पता लग गया है.. भूकम्प के समय हमारे उपग्रह के कैमरों ने कुछ रहस्यमय चित्र लिए हैं.. आओ देखें!

यह रहा वह चित्र... हमारे कम्प्यूटर्स के रिकार्ड के अनुसार जैसे-जैसे यह रोशनी बढ़ती गयी वैसे-वैसे भूकम्प का वेग बढ़ता गया!
यानि कि यह रोशनी ही सारे भूकम्प की कुंजी है....!?
ठीक कहा तुमने भारतकुमार .... लेकिन इस से आगे हमें और कुछ भी नहीं पता है... हमें रहस्य की तह तक जाना होगा!
अगर हम स्क्रीन पर इस चित्र को और बड़ा करके देखें तो शायद हमें कुछ और सुराग मिले!
विक्रम चाचा, कुछ बनी बात क्या?
शायद बन जाये.... मैं इस तस्वीर को और भी बड़ा कर के देखता हूं... यह रहा तस्वीर एनलार्ज करने का बटन!
Books.Jakhira.com
eBooks
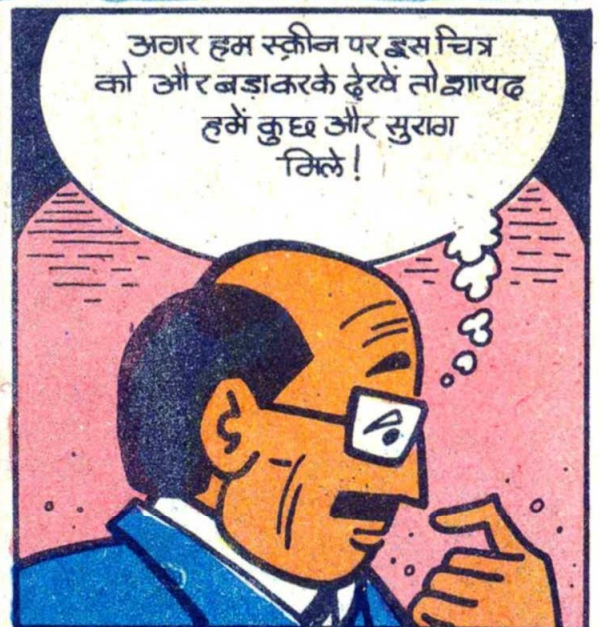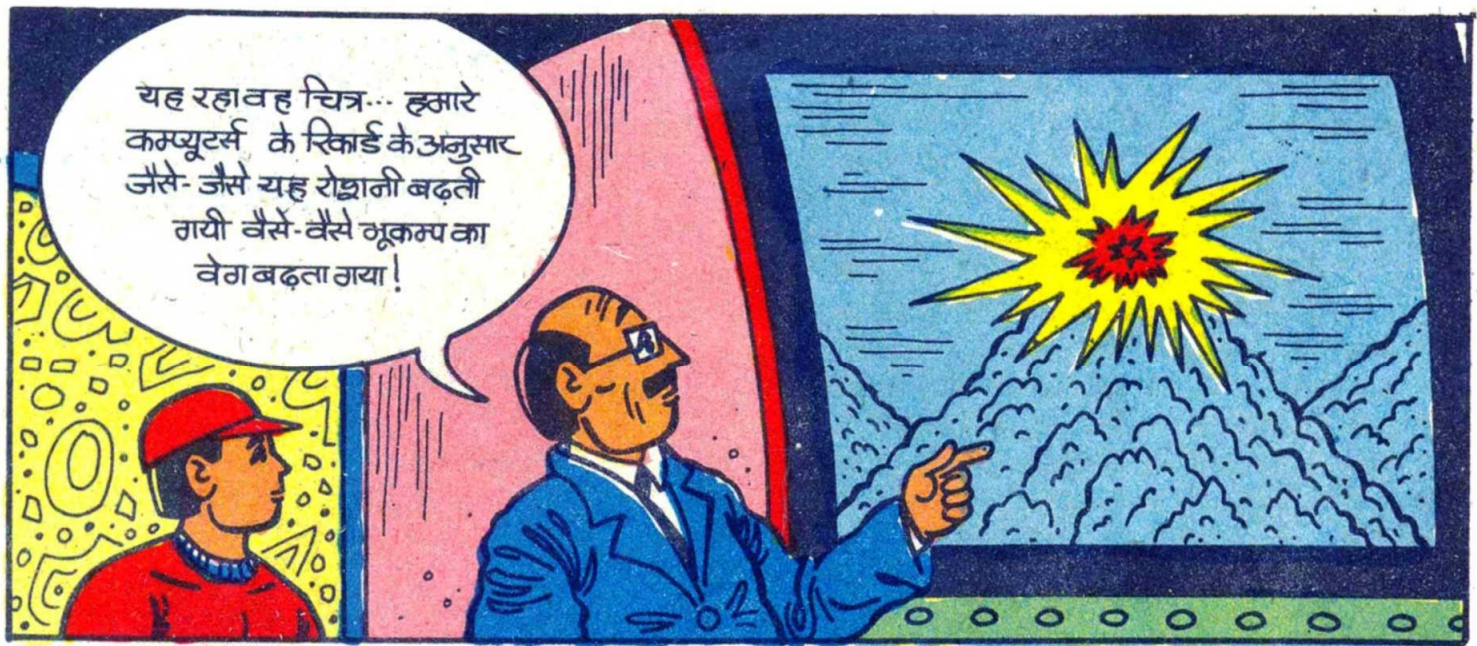
और विक्रम ने उस तस्वीर को पांच लाख गुना बड़ा कर दिया...
यह देखो, भारतकुमार! चमकती रोशनी के ठीक बीचो बीच एक मानव की आकृति... लेकिन यह भला हो कौन सकता है...?
जो भी कोई हो... बड़ा शक्तिशाली लगता है... यह तो अकेले ही पूरे विश्व को तबाह कर सकता है...!
भारतकुमार, इसी क्षण जाओ और उस हिम शिखर पर उस रहस्यमय मानव को ढूंढो... यह तो गजब हो गया!
अगर वह हमारी ही तरह कोई इन्सान हुआ तो मेरे हाथों से नहीं बचेगा...!!

और भारत कुमार उस हिम शिखर को ढूंढने लगा...

तस्वीर के अनुसार तो यही वह हिम शिखर लगता है... मैं इसके चारों ओर घूम कर देखता हूं!
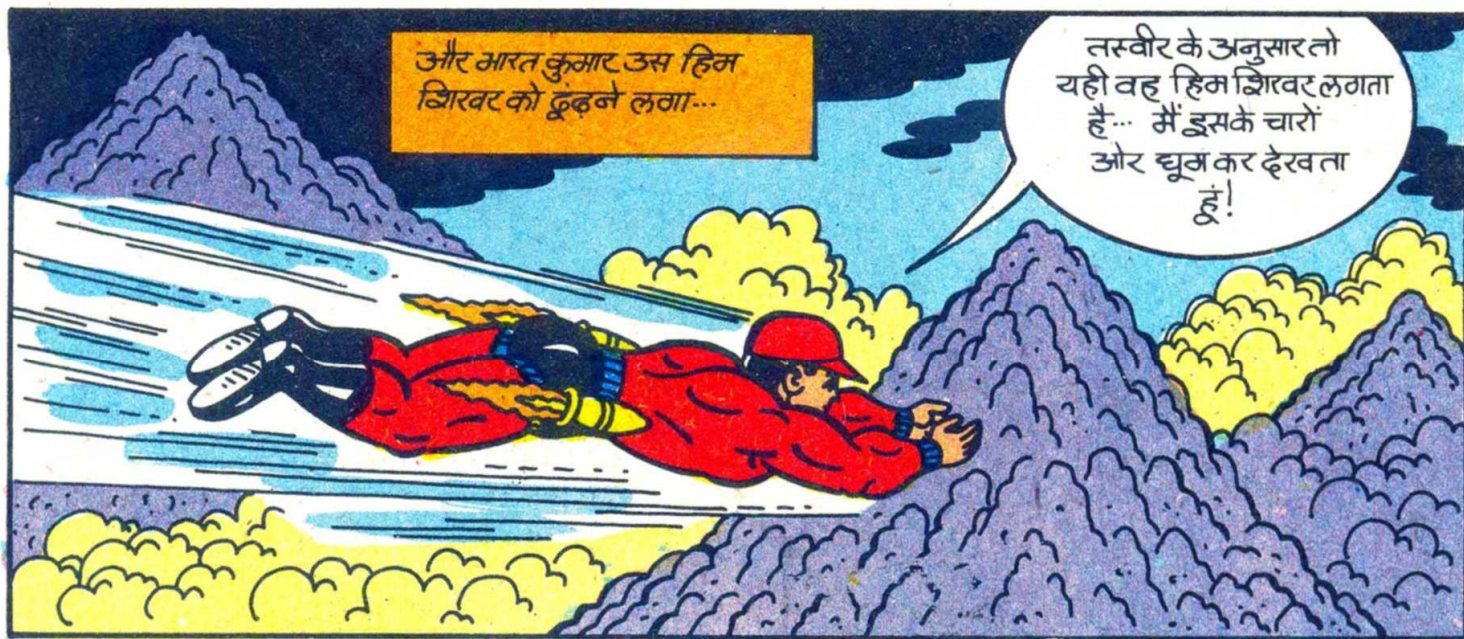
और जब भारत कुमार ने उस हिम शिखर के चारों ओर उड़ते हुए ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया तो उसे गुफा का एक द्वार दिखायी दिया--
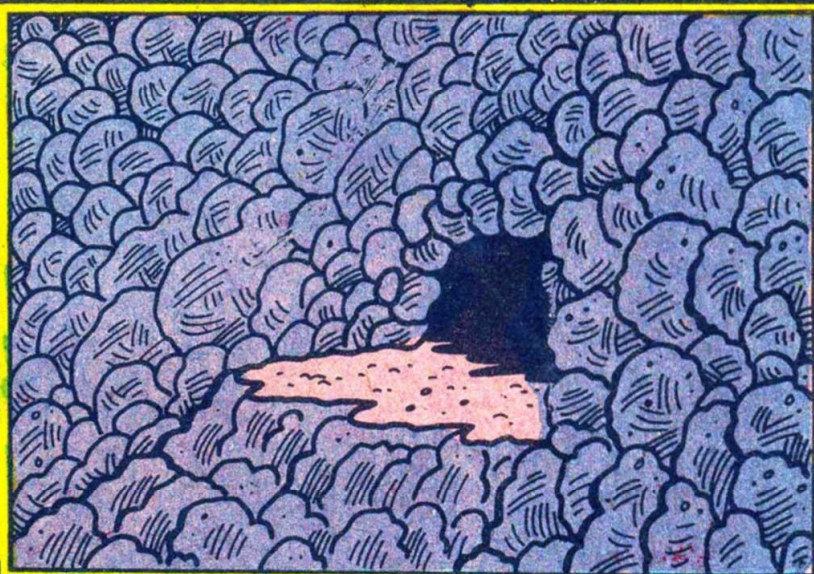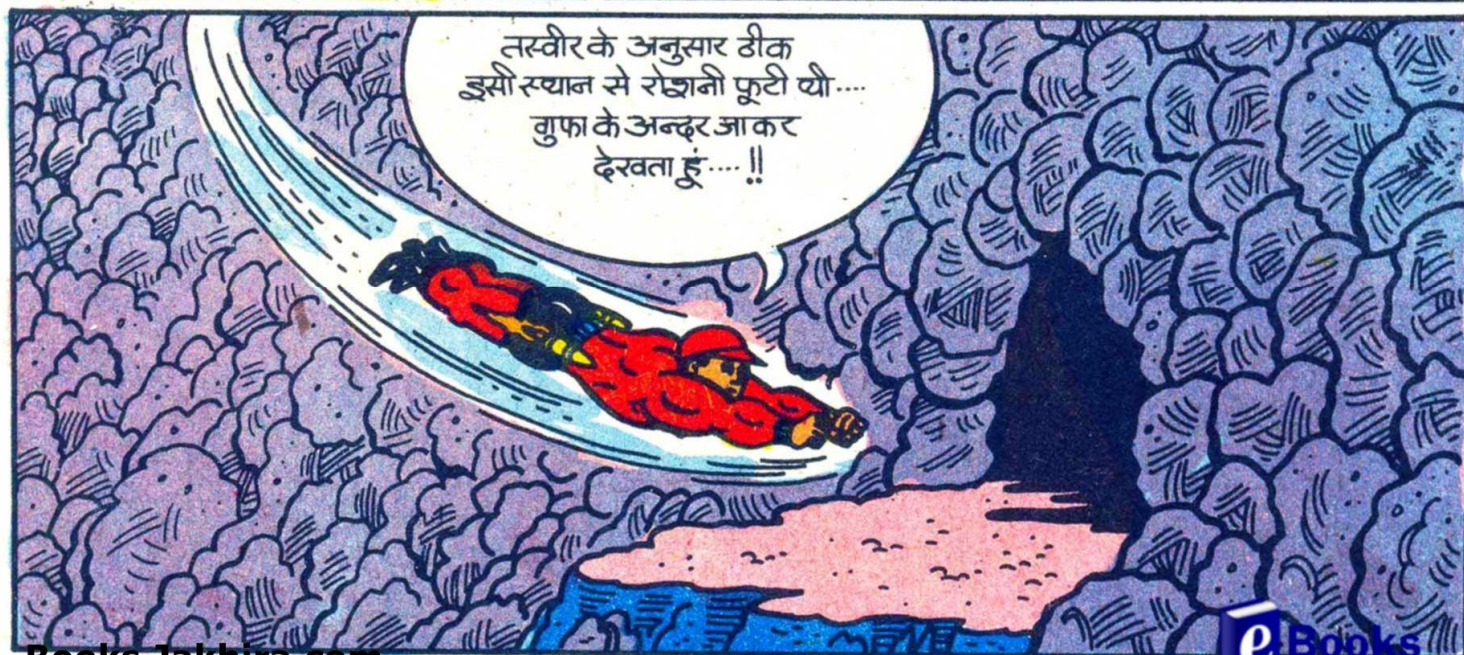
और जब भारत कुमार गुफा के भीतर पहुंचा तो उसकी आंखें आश्चर्य से फैल गयी----
यह भला क्या हो सकता है---? ऐसा लगता है कुछ ही देर पहले यहां जरूर कोई रहस्यमय घटना घटी है--- पर क्या--??
आसपास विशाल पत्थरों के सिवाय और कुछ भी नहीं है--- लेकिन यह भला चीज क्या है---?
ऐसा लगता है इस पट तिब्बती लिपि में कुछ अंकित है---- --विक्रम चाचा के पास इसे ले चलता हूं !!

मारुतकुमार उस पत्थर के टुकड़े को लेकर वापस प्रयोग शाला पहुंचा और विक्रम को सारी बातें कह सुनायी...
इस पत्थर के टुकड़े पर शायद तिब्बती लिपि में कुछ अंकित है, अगर हम इसे पढ़ सकें तो कुछ बात बने!

तुम ठीक कहते हो.. यह तिब्बती लिपि ही है! मैं अभी पता लगाता हूं कि यह क्या लिखा हुआ है!

मेरा यह अनुवादक यंत्र कमप्यूटर्स की सहायता से काम करता है... यह दुनियां की हर भाषा का अनुवाद करने में सक्षम है... अभी देखो इसका कमाल!
इस पत्थर के टुकड़े पर अंकित संदेश का अनुवाद इस प्रकार है ---- "यह तूमहीष नामक लामा पागल है. इसे आजाद न करें वरना दुनिया तबाह हो जायेगी! यह बहुत ही खतरनाक और शक्तिशाली है!!

यह तूमहीष नामक पागल लामा कौन हो सकता है? इसे किस ने कैद किया और भला क्यों?? इस सब का जवाब मेरा कमप्यूटर देगा!!

वैज्ञानिक विक्रम ने एक ऐसे अनोखे कमप्यूटर चलित यंत्र का आविष्कार किया है जिसमें पूरे विश्व का संपूर्ण इतिहास अंकित है!

और कुछ ही क्षणों में विक्रम को अपने उस यंत्र से तूमहीष पागल लामा का पूर्ण इतिहास मिल गया..!
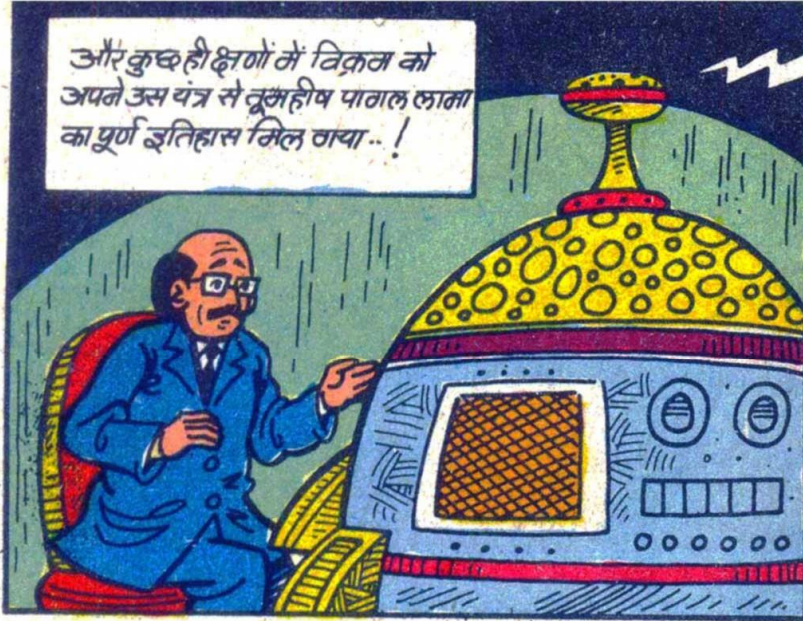
आज से लगभग आठसौ वर्ष पहले तिब्बत में तूमहीष लामा का जन्म हुआ था. वह अपने बाल्यकाल से ही तंत्र-मंत्र साधना में जुटा रहता था---

--तीस वर्ष की आयु में ही उसने सिद्धि प्राप्त कर ली ------ ---वह अपार शक्ति का स्वामी हो गया-- लेकिन उस ने अपनी साधना जारी रखी---

-- और कुछ ही वर्षों बाद उस ने मृत्यु पर भी विजय प्राप्त कर ली- लेकिन इस विजय के बाद उसके मन में बहुत अहंकार आ गया---

--- और एक दिन तंत्र साधना के दौरान उसके दिमाग पर बहुत जोरदार झटका लगा. उस झटके से वह अपना मानसिक सन्तुलन सदा के लिए खो बैठा!

-- तूमहीष लामा पागल होते ही हिंसक बन गया-- और वह अपनी तांत्रिक शक्ति को हिंसक कार्यों में प्रयोग करने लगा-

तूमहीष पागल लामा पूरे तिब्बत के लिए प्रकोप बन गया.. दिन ब दिन उसकी हिंसक प्रवृति बढ़ती ही गयी.. चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गयी...
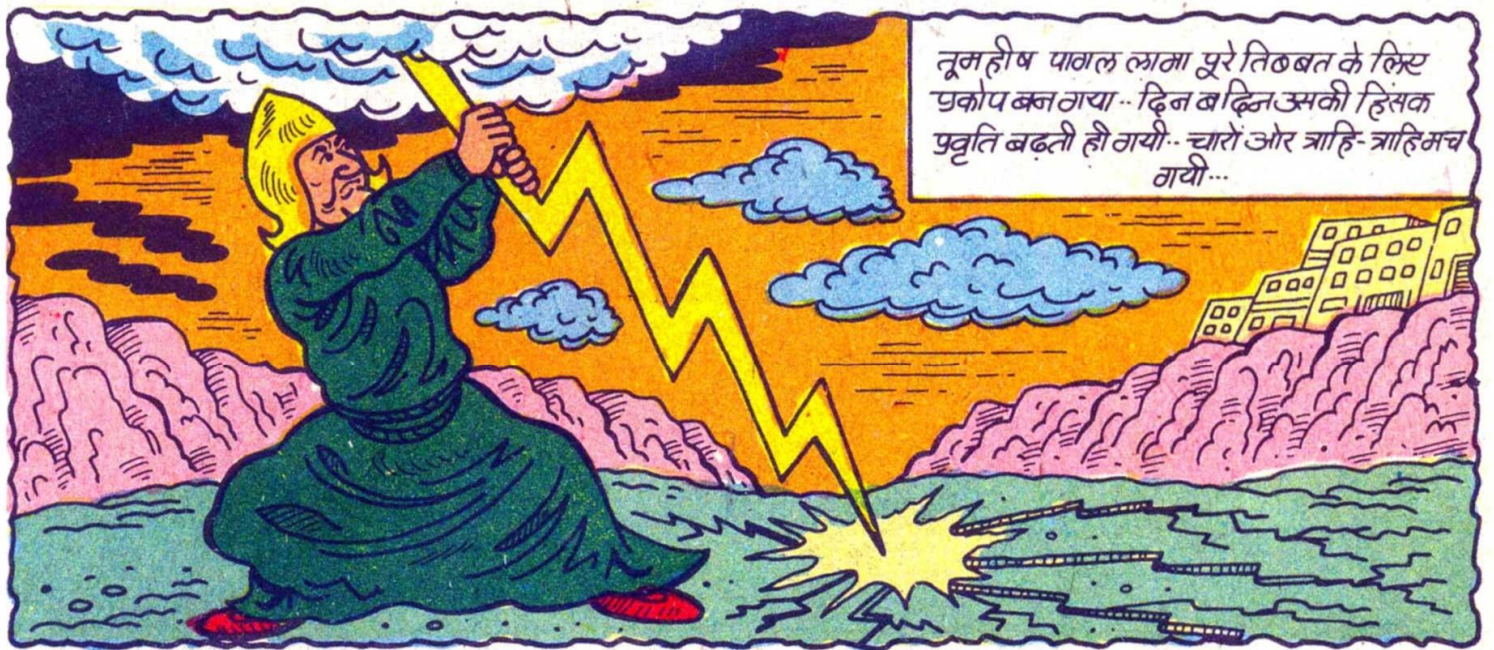
... वह जब चाहे अपनी तांत्रिक शक्ति से उस पूरे इलाके में तबाही मचा देता था... आंधी, तूफान, भूकम्प पैदा करना उस के बायें हाथ का खेल था..
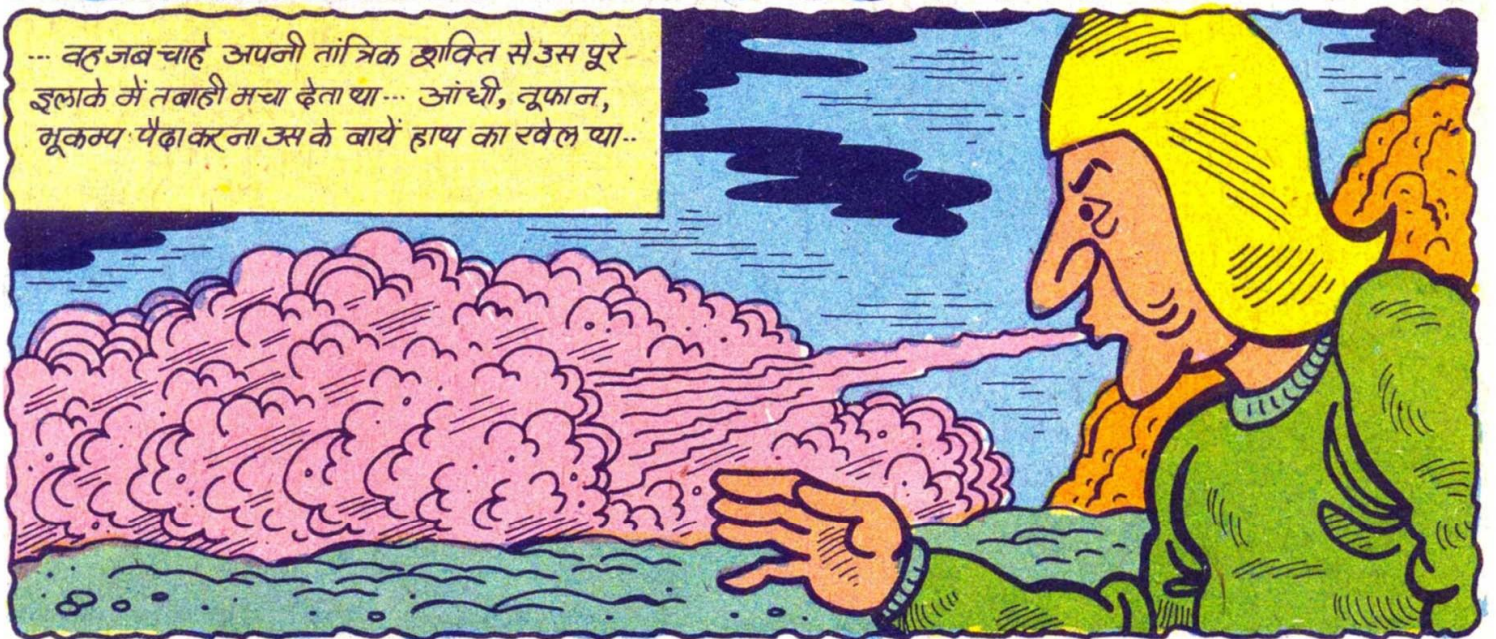
उसी काल में एक बहुत ही तपस्वी वृद्ध लामा शूनू हुआ करते थे.. तिब्बत के प्रमुख लामागण जनता की ओर से उन से सहायता मांगने उन के निवास स्थान एक गुफा में पहुंचे..

केवल शूनू ही अपने तपोबल से तूमहीष पर अंकुश लगा सकता था.. सो वे सबके अनुरोध पर तूमहीष को बस में करने के लिए राजी हो गये....
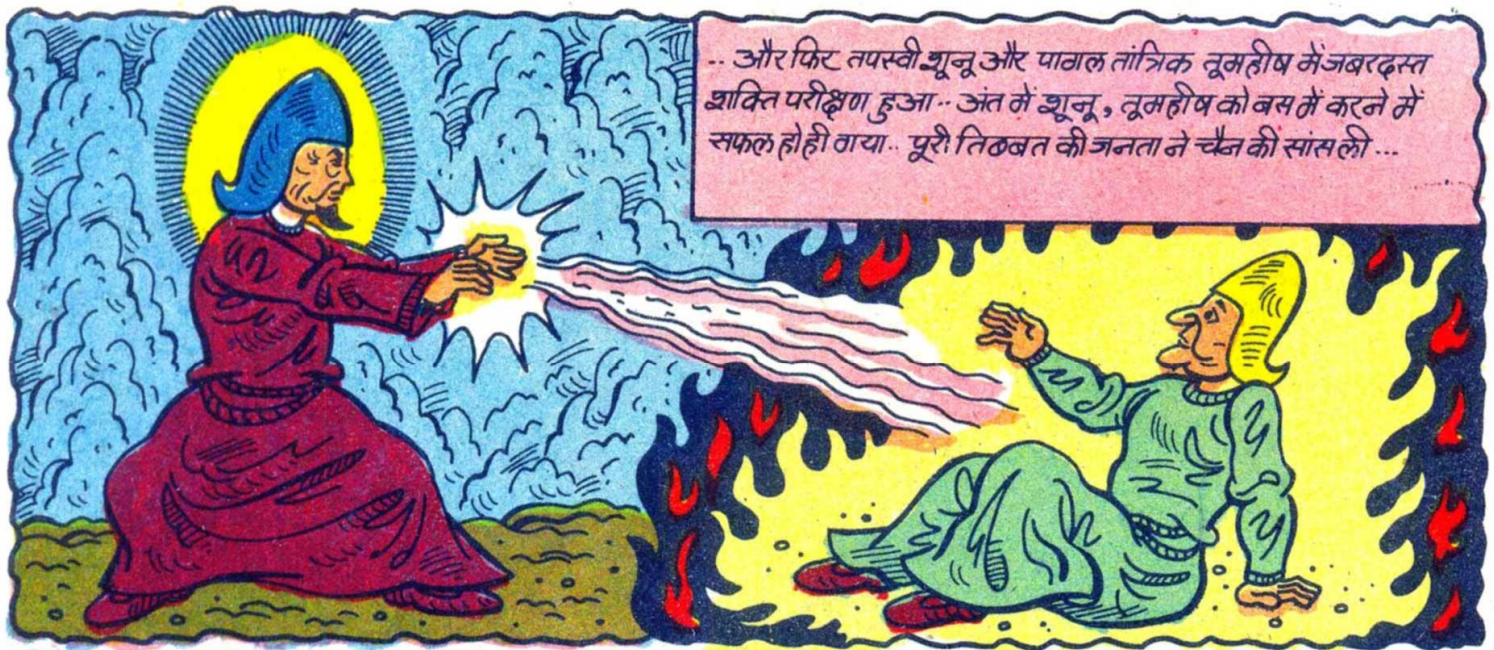
...और फिर तपस्वी शूनू और पागल तांत्रिक तूमहीष में जबरदस्त शक्ति परीक्षण हुआ... अंत में शूनू, तूमहीष को बस में करने में सफल हो ही गया... पूरी तिब्बत की जनता ने चैन की सांस ली...

तपस्वी शूनू ने अपनी गुफा में ही विशेष शीशे के बने एक पिंजड़े में तूमहीष को कैद कर लिया... और तीन सौ वर्ष तक जीने के बाद अपना शरीर त्यागने से पहले पिंजडे के पास पत्थर के एक टुकड़े पर संदेश लिख कर छोड़ गये....

...और तब से वह खतरनाक पागल लामा उसी गुफा में कैद है... दुनियां की निगाहों से बहुत दूर... परमाणु बम से भी अधिक खतरनाक!

और अब वह खतरनाक पागल लामा आजाद है! लेकिन वह अपनी कैद से आजाद हुआ कैसे...? कुछ न कुछ उत्तर आ रहा है मेरे दिमाग में!

कल जहां चीन में परमाणु बम का परीक्षण हुआ था वह स्थान हिम शिखर पर स्थित उस गुफा के काफी करीब है...
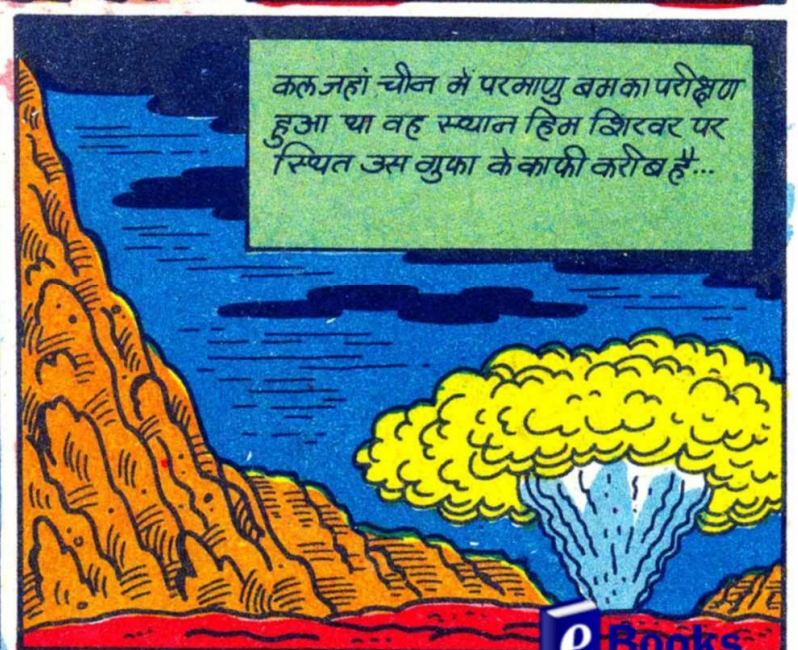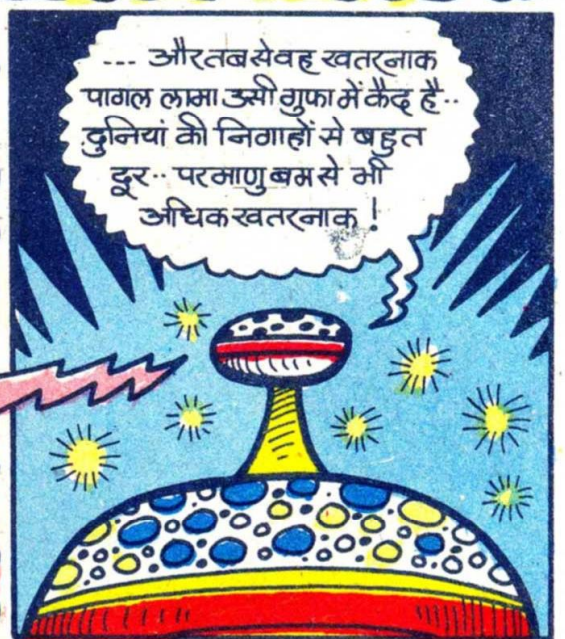
--- परमाणु विस्फोट के कारण उस पूरे इलाके में हल्का भूकम्प आया होगा---

---पर्वतीय इलाके में हल्के भूकम्प के झटके भी काफी खतरनाक साबित हो सकते हैं---

--- उसी भूकम्प के प्रभाव से शीशे का पिंजड़ा टूट गया होगा और पागल लामा तुमहीष सैकड़ों वर्षों की कैद से आजाद हो गया होगा---

---और उसने आजाद होते ही गुफा के द्वार पर आकर अपनी तांत्रिक शक्ति से भयंकर भूकम्प पैदा किया होगा---

--- हमारे जासूसी उपग्रह के कैमरों ने हिम शिखर पर जिस चमकदार रोशनी की तस्वीर खींची थी वह उसी क्षण की रही होगी!
भारत कुमार, तुम इसी क्षण जाओ और उस पागल लामा को ढूंढो! उसके आजाद रहने से पूरे विश्व को खतरा है--- वह कभी भी, कहीं भी कोई भी खतरनाक काम कर सकता है!
मैं अभी जाता हूं विक्रम चाचा! वह पागल लामा जीता जागता परमाणु बम है --- उसे हर हालत में हमें रोकना ही होगा--!!

और भारत कुमार पागल लामा को ढूंढने निकल पड़ा--- उसकी तेज निगाहें बाज़ की तरह दूर-दूर अपने शिकार को ढूंढ रही थीं---!
इतनी बड़ी दुनियां में मैं उस लामा को कैसे ढूंढूंगा--? वह अपनी तांत्रिक शक्ति से जाने इस समय कहां प्रलय मचा रहा होगा??
तभी भारत कुमार की टोपी में लगे एक सूक्ष्म रेडियो ने एक संदेश पकड़ा---
हैलो-- हैलो--- मैं बैरूत एयर पोर्ट कन्ट्रोल टावर से बोल रहा हूं-- हमारे एक विमान का रहस्यमय ढंग से अपहरण हो गया है---- हैल्प!!
रहस्यमय अपहरण?-- पहले मैं बैरूत एयरपोर्ट जाता हूं!
कुछ ही मिनटों में भारत कुमार वहां पहुंच गया-----
हो सकता है कि यह कारस्तानी उसी पागल लामा की ही हो--!
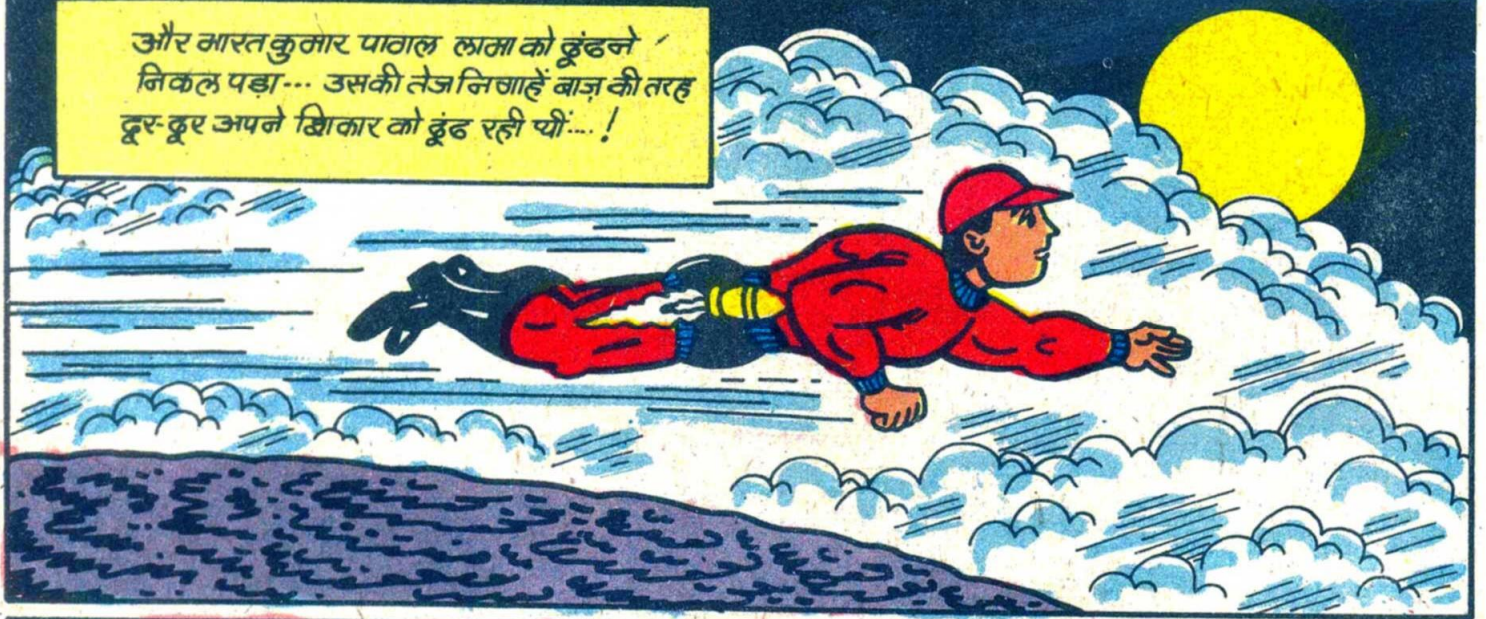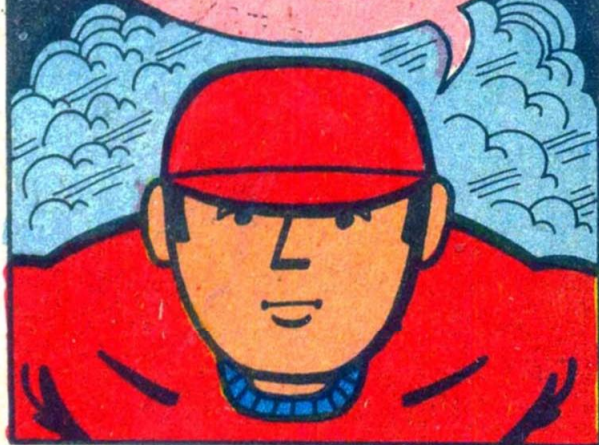
भारतकुमार सीधा हवाई अड्डे के कंट्रोल टावर में पहुंचा...
भारतकुमार, अच्छा हुआ तुम आ गये! कुछ ही देर पहले हमें विमान नम्बर C-22 से संदेश मिला है कि एक अजीबो-गरीब प्राणी ने विमान को अपने बस में कर लिया है!!
तो मेरा शक ठीक ही निकला.... वह अजीबो-गरीब प्राणी और कोई नहीं बल्कि पागल लामा ही होगा... .... मैं अभी पहुंचता हूं वहां!!
और कुछ ही देर में भारतकुमार ने उस अपहरित विमान को ढूंढ लिया....
यह विमान अजीब तरह से कलाबाजियां खा रहा है... ...लेकिन वह पागल लामा तो कहीं दिखता नहीं!?
उसी समय विमान में बैठे यात्रियों का डर के मारे बुरा हाल था...
हे भगवान, अगर जिन्दा बचा तो फिर कभी विमान में नहीं बैठूंगा!
कृपया शान्त रहिये.. सब ठीक हो जायेगा.. हौंसला रखिये!
बबबबब.. बचाओ!
बचाओ! कृपया कोई बचाओ ..... एक अजीबो-गरीब प्राणी ने हमारे विमान को अपने बस में कर लिया है!!

जब भारत कुमार विमान के करीब पहुंचा तो उसे सब कुछ समझ में आ गया...

ही ही ही! हु हु हु...!! हे हे हे!!!

वह रहा पागल लामा तूमहीष! --- उसका ध्यान अपनी ओर खींचता हूं....

रुको!!

गुर्र्र!
मेरी तरकीब काम कर गयी... अब मैं इस पागल लामा को विमान से दूर ले चलता हूं!

हैलो... हैलो...! कन्ट्रोल टावर! हमारे विमान को भारत कुमार ने आज़ाद करा दिया! हम सीधे एयरपोर्ट पहुंच रहे हैं... ओवर!!

पागल लामा भारत कुमार का पीछा करता रहा...
लड़के, तुम ने मुझ से बहुत पीछा करवा लिया अपना... ...गुर्र्र्रर्र!!

अब जरा देखो, मेरी तांत्रिक शक्ति का कमाल! हा हा हा!
आह!

लेकिन भारत कुमार के रसायन लगे विशेष वस्त्रों ने तूमहीष के प्रहार को झेल लिया... और फिर भारत कुमार ने अपना प्रहार किया...
अब जरा मेरा फौलादी मुक्का भी चखकर देखो...!

भारत कुमार का फौलादी मुक्का लगते ही तूमहीष कटी डाल की तरह नीचे सागर में गिरने लगा...
आह!
बूढे बाबा! क्षमा करना... शायद मैंने बहुत जोर से मुक्का जमा दिया है!!

लेकिन दूसरे ही क्षण तूमहीष ने अपने आप को सम्भाल लिया...
लड़के, तेरी यह मजाल...?
गुर्रर्रर्र!

बहुत हो गया... अब मैं तुम्हें दिखाता हूं अपनी असली शक्ति... हो हो हो!

और उस पागल लामा ने कुछ मंत्र पढ़े---- मंत्र पूरे होते ही दो विशालकाय मछलियां सागर से बाहर आ गयीं---
मछलियों, जाओ और उस मूर्ख लड़के को आपस में बांट कर खा लो-- !
हाहाहा !
और वे दोनों मछलियां अपने दांत किटकिटाती हुई भारत कुमार की ओर लपकीं----
कमाल है ! ---- हवा में उड़ती हुई दो खतरनाक मछलियां ---- इन्हें भी ठिकाने लगाना ही होगा !!
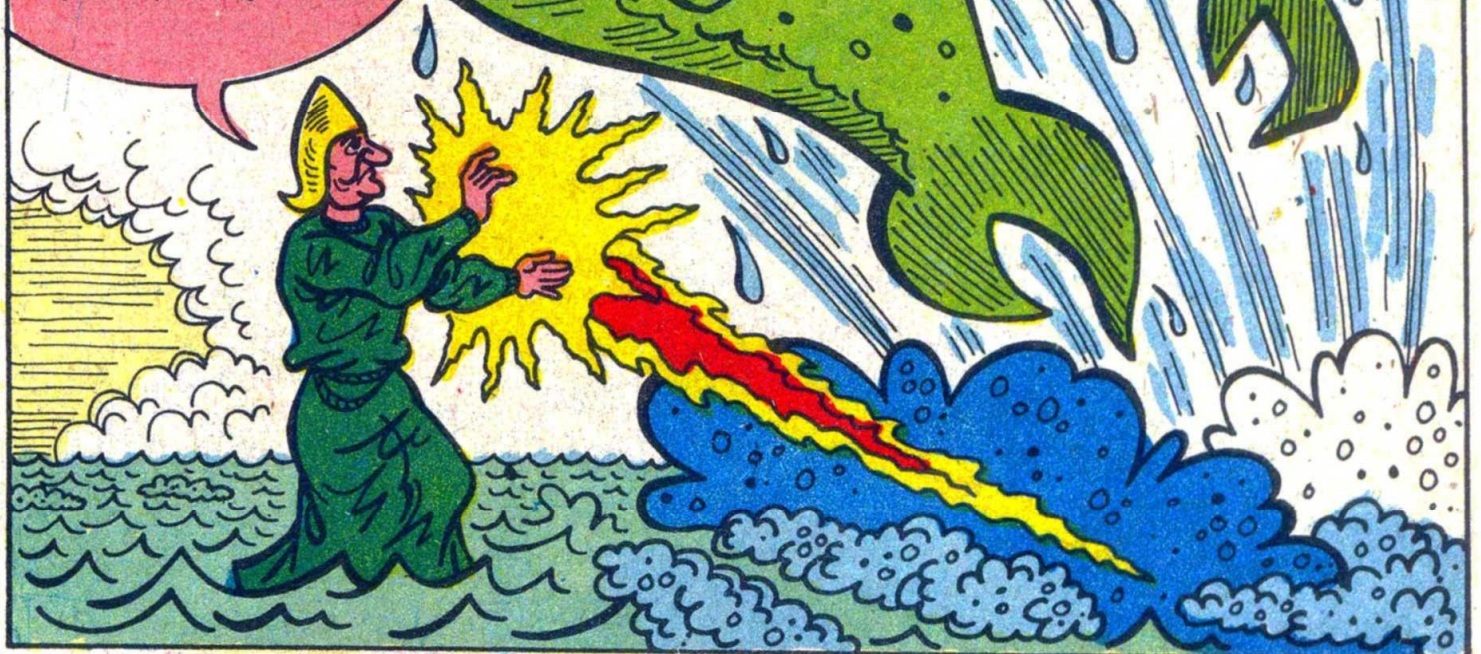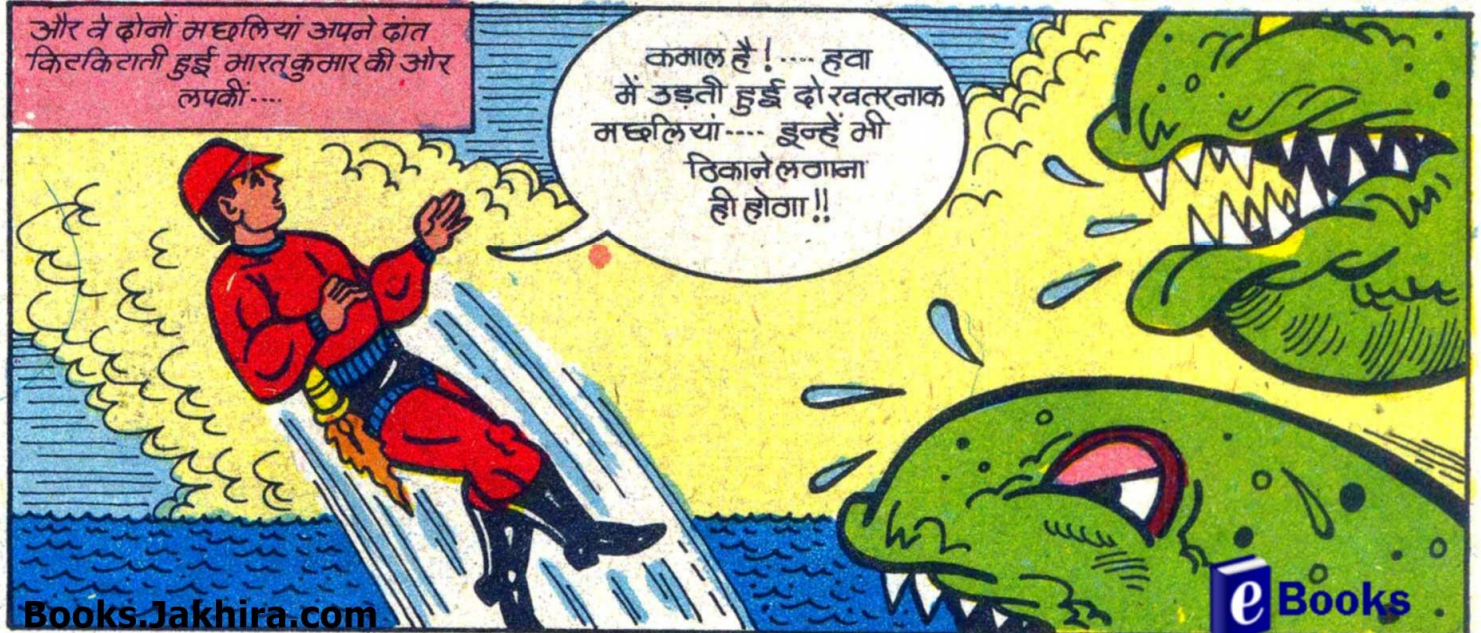
भारत कुमार अपने रॉकटों के सहारे हवा में कलाबाजियां खाने लगा --- और उसके पीछे-पीछे वे मछलियां ---
और फिर अचानक घूमकर भारत कुमार ने एक मछली पर ज़ोरों से वार किया ---
एक मछली को भारत कुमार ने अपने शक्तिशाली वारों से खत्म कर दिया... तभी दूसरी मछली उसकी ओर झपट पड़ी.... लेकिन भारत कुमार तैयार था....
eBooks
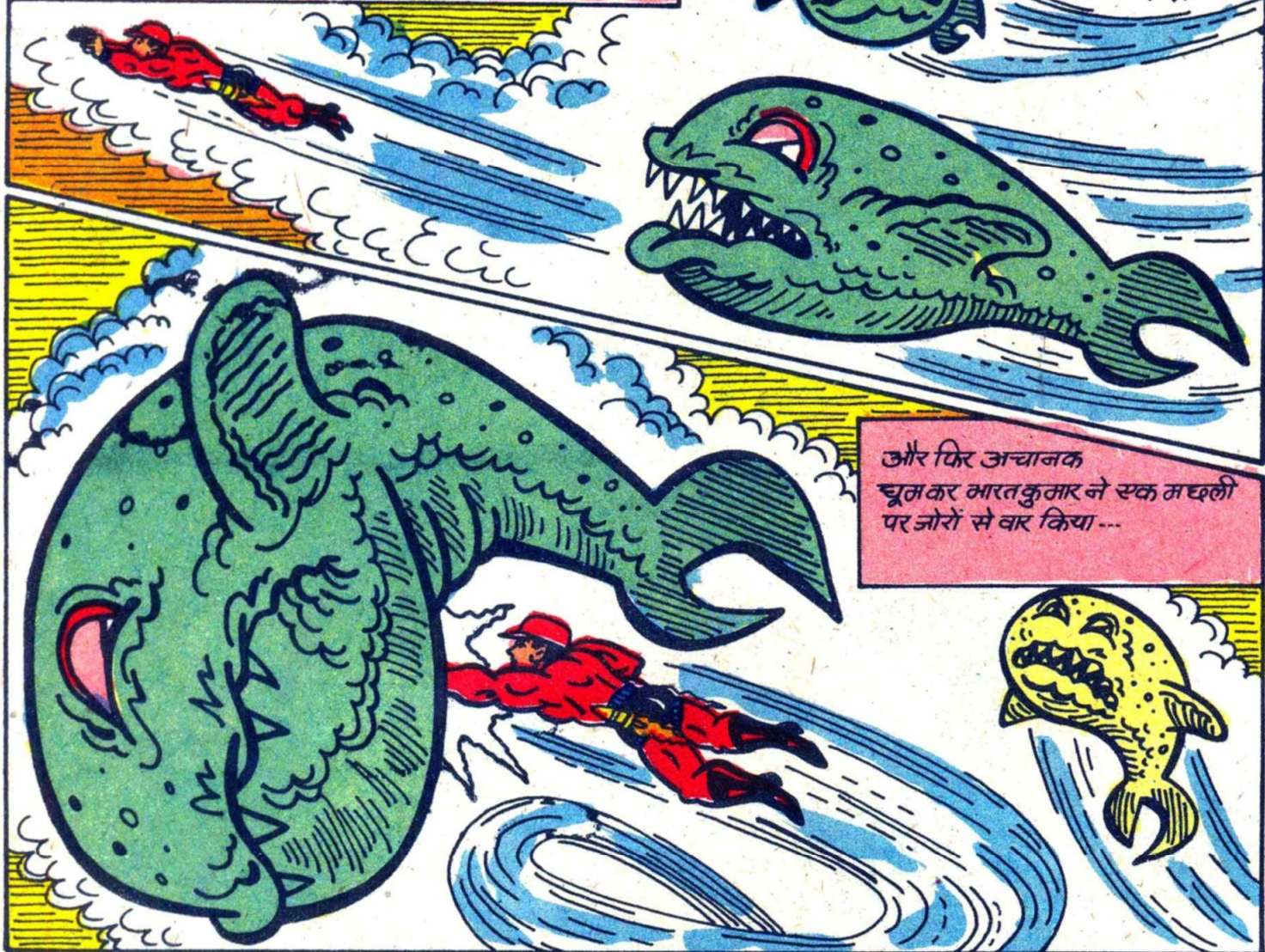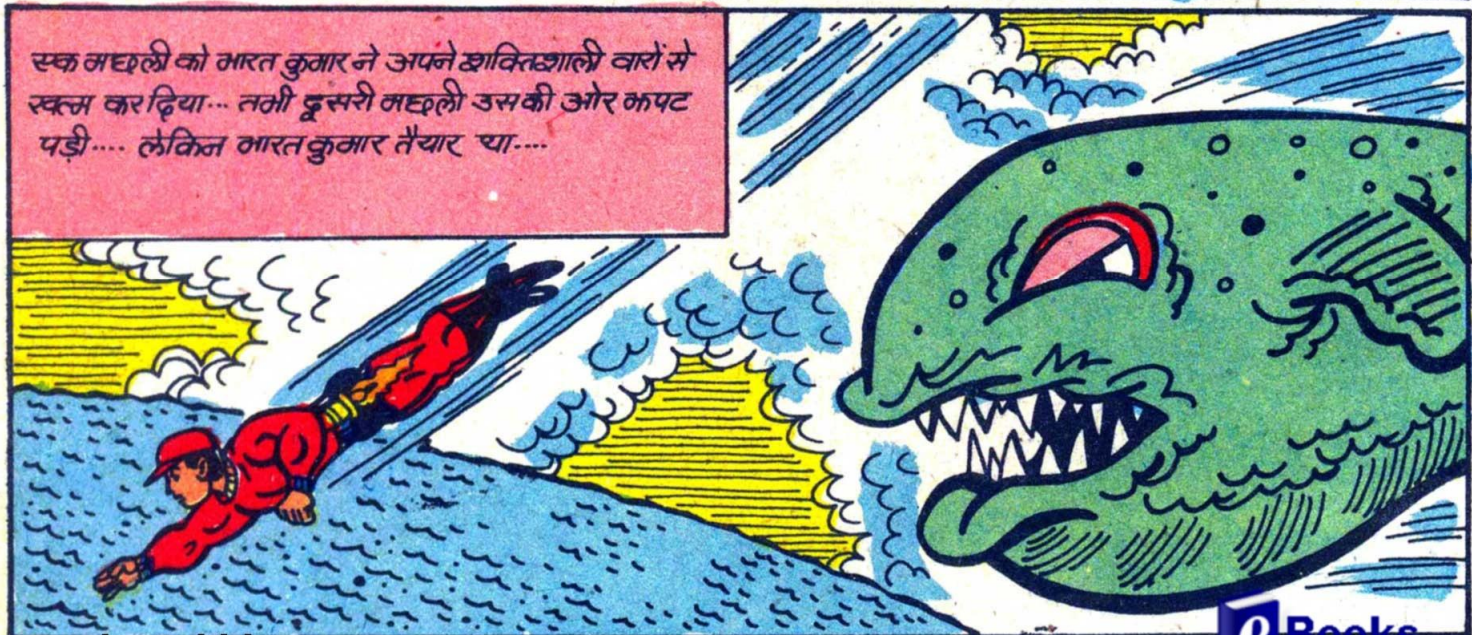
और वह तेज गति से नीचे सागर की ओर तैरता आया--- पीछे पीछे थी वह मछली...
ठहर मछली की बच्ची...! अब तेरी बारी है!!

और भारत कुमार अचानक ही अपनी दिशा बदल कर आकाश की ओर उड़ चला....
अब यह मछली पानी की सतह से टकरा कर मरेगी!
और फिर वही हुआ... वह विशाल काय मछली अपने-आप को रोक नहीं पायी और--- अत्यंत तेज गति से पानी की सतह से टकरायी और अपना दम तोड़ दिया...
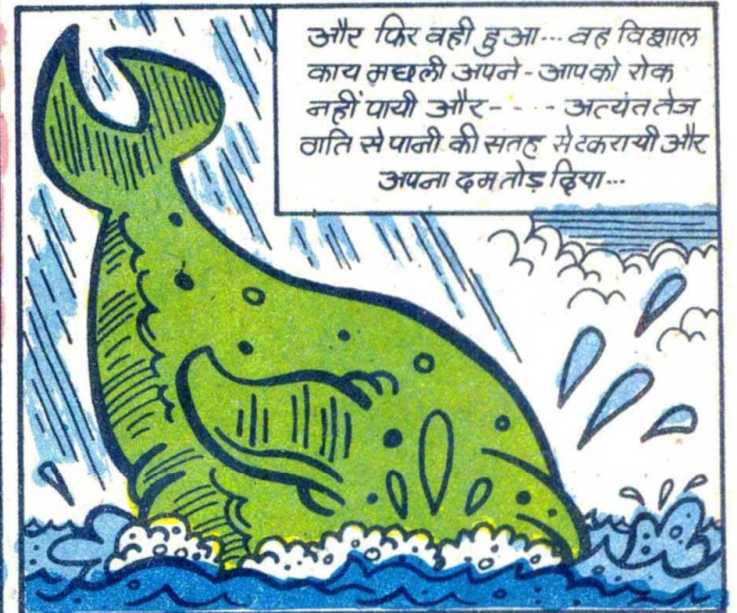
गुर्ईईर्र!
अब मैं अपनी अंतिम शक्ति का प्रयोग करूंगा--!

इस महाशक्ति के वार से आज तक कोई नहीं बच पाया है--!
होही ही!

और पागल लामाने अपनी महाशक्ति का प्रयोग करते हुए भारतकुमार पर वार किया---!

लड़के! ले अब सम्भाल मेरे इसवार को ----- -- ही ही ही!!

इस अग्नि ने तो मुझे पूरी तरह से जकड़ लिया है-- लगता है इसकी गर्मी को मेरे कपड़े अधिक सहन नहीं कर पायेंगे-- आहऽऽऽ!!

उस बिजली की किरण का वार करने वाला कोई और नहीं बल्कि खुद वैज्ञानिक विक्रम थे....
सिद्धि प्राप्त इस लामा को हम मार तो सकते नहीं.. लेकिन इस वैज्ञानिक युग में हम इन किरणों की बौछार से इसके पागलपन का इलाज जरूर कर सकते हैं!
विक्रम चाचा, ... मुझे इस कैद से छुड़ाइये! आह!
य यह क्या हो रहा है..? मेरा सिर फटा जा रहा है ....! अअआह!
और फिर कुछ ही क्षणों बाद...
मैं कहां हूं... ?... मैं सागर के पास क्या कर रहा हूं.... ? यह सब क्या हो रहा है.. ??
तूमहीष का पागलपन ठीक होते ही भारतकुमार भी उसकी कैद से आजाद हो गया...
विक्रम चाचा, आप बहुत ही ठीक समय पर आये! वरना आज मैं इस महाशक्ति के वार से बच न पाता!
Books.Jakhira.com
eBooks
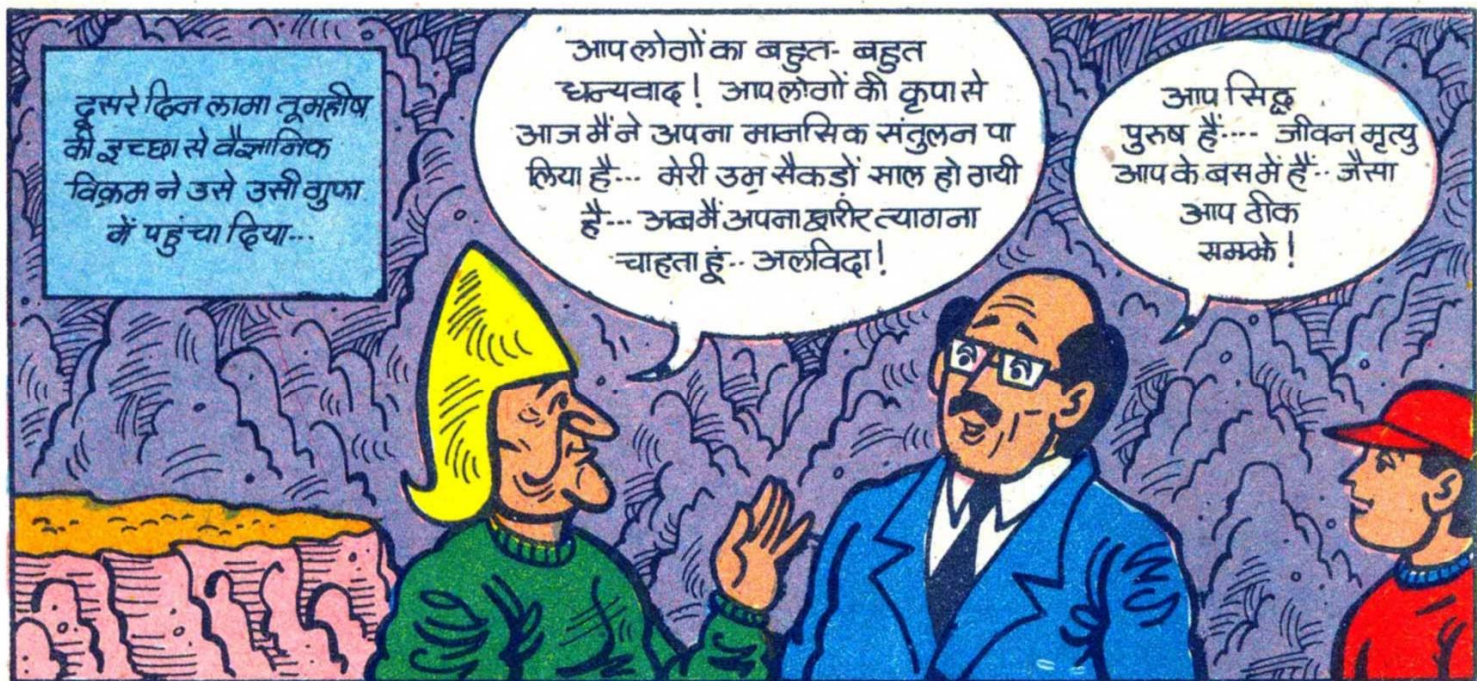
और फिर तूमहीष लामा ने ईश्वर का नाम जपते हुए उसी क्षण अपनी सांसों को रोक कर अपना शरीर त्याग दिया... और अनन्त में विलीन हो गया...

भारतकुमार और वैज्ञानिक विक्रम वापस अपनी प्रयोग-शाला की ओर चल दिये...
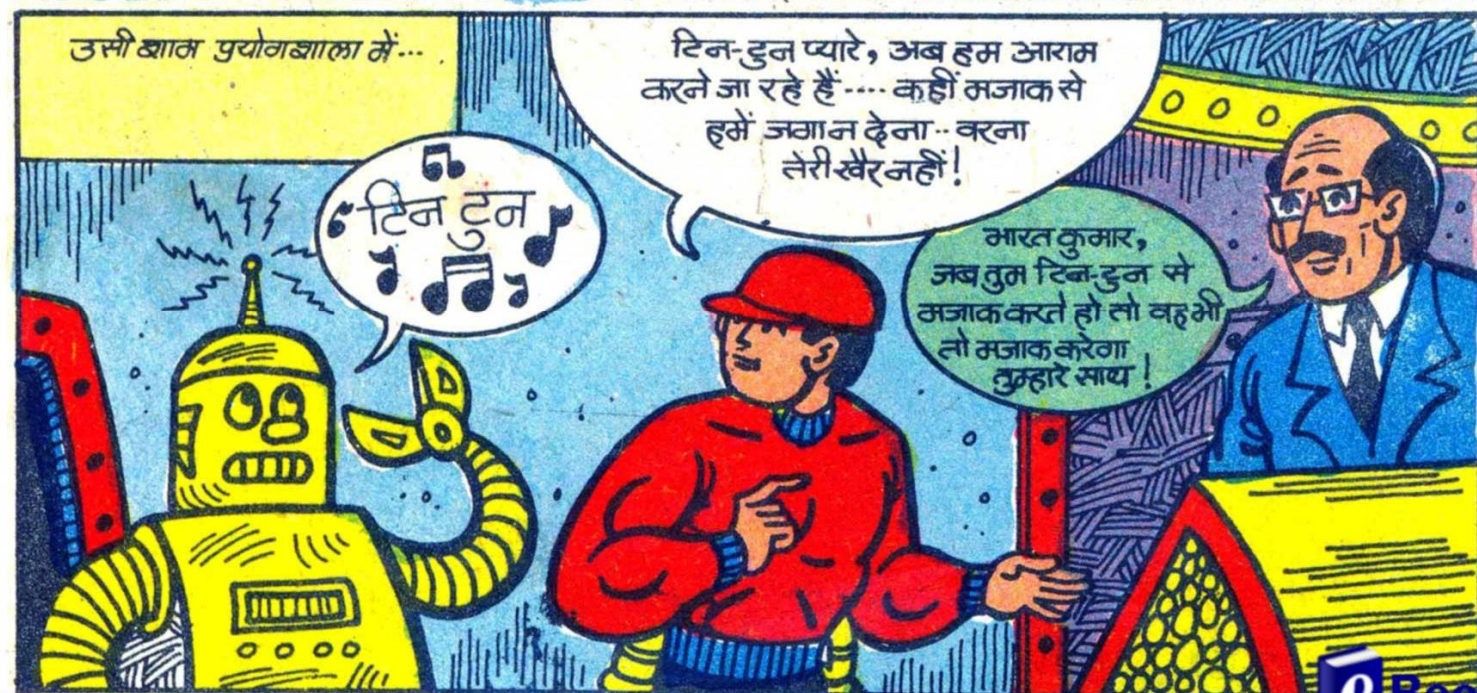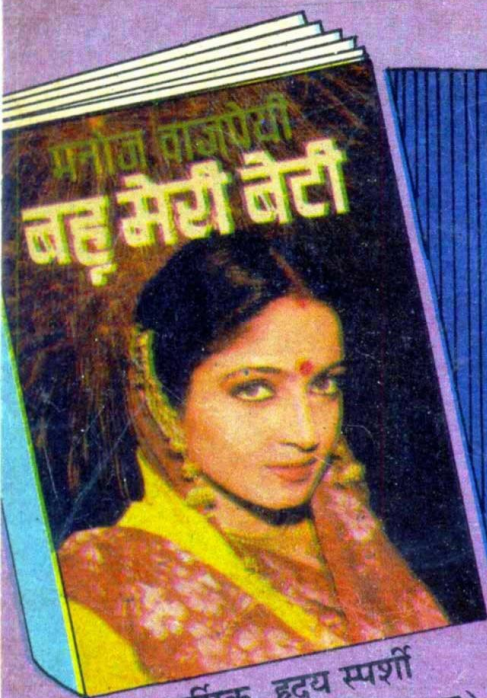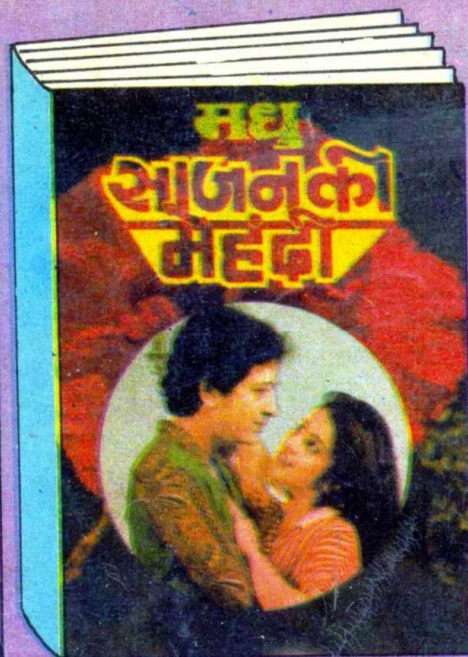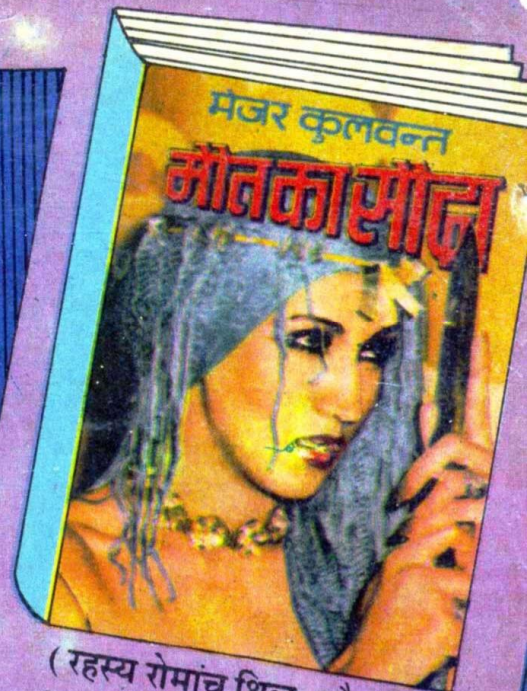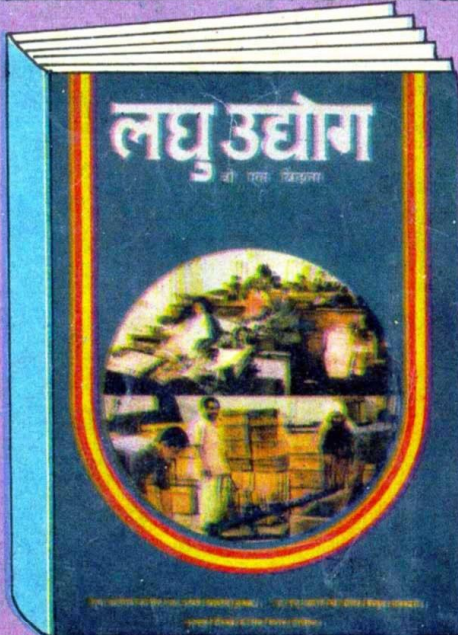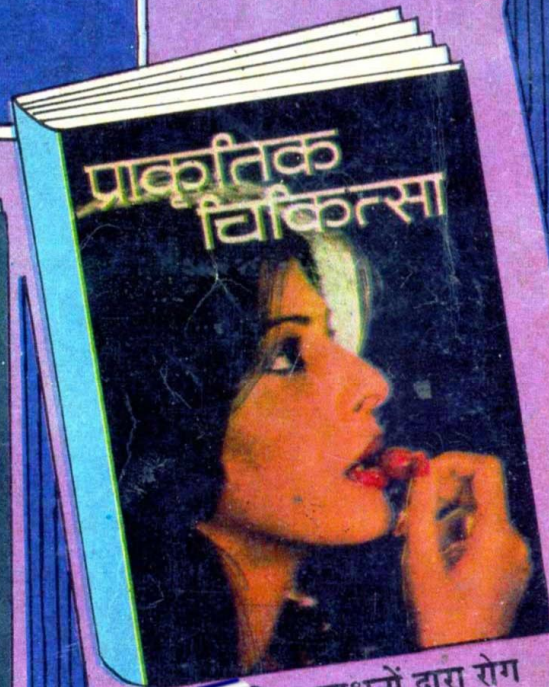
बहू मेरी बेटी
मधु
साजन की मेंहदी
मेजर कुलवन्त
मौत का सौदा
(मार्मिक, हृदय स्पर्शी भावनाओं से ओतप्रोत उपन्यास)
बहू मेरी बेटी
मनोज वाजपेयी– मूल्य 6/–
(एक नारी द्वारा नारी के अर्न्तद्वन्द की गाथा)
साजन की मेहंदी
मधु– मूल्य 6/–
(रहस्य रोमांच थ्रिल, और मेजर दिलीप के सनसनीखेज कारनामों से भरपूर दस्तावेज)
मौत का सौदा
मेजर कुलवन्त– मूल्य 6/–
सुपर पॉकेट बुक्स
गुलाब हाऊस मायापुरी, नई दिल्ली-110064
के तृतीय सैट की श्रृंखला में
ट्रिपल मर्डर
लघु उद्योग
प्राकृतिक चिकित्सा
(आपके प्रिय युवा जासूसी
पन्यासकार का
तेज रफ्तार थ्रिलर उपन्यास देकर
जिन्होंने जासूसी उपन्यास जगत
में नया स्थान प्राप्त किया है)
(युवा उद्यमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी पुस्तक)
साधनों द्वारा रोग
निवारण की सुगम पद्धति "प्राकृतिक
चिकित्सा" पर लिखित अत्यन्त
उपयोगी पुस्तक)
20 अगस्त से सभी पुस्तक विक्रताओं के यहाँ उपलब्ध।
MADHU MUSKAN PRINTED AND PUBLISHED BY DEEPAK KAPURFOR AND ON BEHALF OF MADHU MUSKAN PUBLICATIONS PRIVATE
Books.Jakhira.com
eBooks